eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

अनुसंधान के क्षेत्र में बौद्ध शिक्षाओं का योगदान

निरूपमा सिंह[1],
[1]असिस्टेंट प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, शहीद मंगल पाण्डे राजकीय म0 स्ना0 महा0, माधवपुरम, (मेरठ)

Received: 20 August 2025 Accepted & Reviewed: 25 August 2025, Published: 31 August 2025

Abstract

बौद्ध शिक्षाओं ने अनुसंधान के क्षेत्र में गहन योगदान दिया है। बौद्ध दर्शन का मूल आधार है, प्रत्यक्ष अनुभव, तार्किक चिंतन, विश्लेषण और सतत प्रश्नाकुलता। यह दृष्टिकोण शोध की वैज्ञानिक पद्धति से अत्यंत मेल खाता है। 'प्रज्ञा', 'सम्यक दृष्टि' और 'अनित्यता' जैसे सिद्धांतों ने जिज्ञासा और वस्तुनिष्ठता की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया। अनुसंधान के क्षेत्र में बौद्ध शिक्षाओं का योगदान तीन स्तरों पर देखा जा सकता है– (1) ज्ञानमीमांसीय स्तर– जिसमें प्रत्यक्ष (प्रत्यक्षा) और तर्क (अनुमान) के महत्व को रेखांकित किया गया, (2) पद्धतिगत स्तर– जिसमें सत्य की खोज के लिए निरंतर परीक्षण, तर्क–वितर्क और अनुभूत सत्य पर बल दिया गया, और (3) नैतिक स्तर– जिसमें अनुसंधान के दौरान अहिंसा, करुणा और निस्वार्थ भाव को बनाए रखने की प्रेरणा दी गई। आधुनिक अनुसंधान पद्धतियों जैसे एम्पिरिकल स्टडी, हाइपोथीसिस टेस्टिंग तथा क्रिटिकल थिंकिंग में बौद्ध दृष्टिकोण की गहरी छाप मिलती है। अतः बौद्ध शिक्षाएँ केवल आध्यात्मिक साधना तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि उन्होंने ज्ञान की खोज और वैज्ञानिक अन्वेषण की प्रक्रिया को भी नई दिशा प्रदान की।

मुख्य शब्द– बौद्ध दर्शन, अनुसंधान, प्रत्यक्ष अनुभव, तार्किक चिंतन, अनित्यता, प्रज्ञा, सम्यक दृष्टि, वैज्ञानिक पद्धति, ज्ञानमीमांसा, करुणा।

Introduction

आज के दौर में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के सम्बन्ध में नित नवीन शोध किए जा रहे हैं। यह कहा जा सकता है कि वर्तमान 21वी सदी तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा से परिपूर्ण है। संवैधानिक दृष्टिकोण के अनुसार भारत का संविधान भी अपने नागरिकों के मूल कर्तव्यों के माध्यम से प्रावधान करता है कि प्रत्येक नागरिक वैज्ञानिक और मानवतावादी दृष्टिकोण विकसित करें। आज से 2500 वर्ष पूर्व छठी सदी ईसा पूर्व में महात्मा बुद्ध द्वारा भी अपनी शिक्षाओं के माध्यम से तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक व मानवतावादी साथ ही समन्वयवादी दृष्टिकोण को विकसित करने की दीक्षा जनसामान्य को प्रदान की जा रही थी। महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं का प्रभाव बहुत ही व्यापक रहा। भारत सहित वैश्विक स्तर पर उनकी शिक्षाओं को जनसामान्य व राजाओं द्वारा अपनाया गया। आज भी महात्मा बुद्ध की वैज्ञानिक शिक्षाओं का प्रभाव मौजूद है और लगातार बढ़ भी रहा है। महात्मा बुद्ध की शिक्षाओं को बौद्ध धम्म (अर्थात् बुद्ध के शिक्षाओं के अनुसार आचार–व्यवहार करना) भी कहा गया, जिसमें मूलतः मानवतावादी शिक्षाओं द्वारा दीक्षित किया जाता है। जिसके द्वारा समतापूर्ण तर्कपूर्ण व वैज्ञानिक दृष्टिकोण को विकसित किया जाता है। लिंग, वर्ण, जाति व रंग इत्यादि किसी के आधार पर कोई भी विभेद निषेध किया गया है। उनकी यह शिक्षाऐं सार्वभौमिक प्रकृति की है। अनुसंधान कार्य की प्रकृति भी सार्वभौमिक होती है, जिसकी राह सभी के लिए खुली होती है। अनुसंधान सभी प्रकार की समस्याओं के समाधानों की खोज करता है, साथ ही गलत अवधारणाओं का खण्डन करता है और पूर्व

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

में मौजूद ज्ञान की निष्पक्ष पुनः जांच करता है। महात्मा बुद्ध द्वारा पहले इसी विधि के अनुसार मानव के जीवन की समस्याओं के समाधान प्राप्त करने के लिए ज्ञान या हल खोजा गया। इससे पूर्व इस प्रकार का उदाहरण भारतीय सन्दर्भ में नहीं प्राप्त होता है। अनुसंधान कार्य को करने का एक निश्चित तरीका होता है जिसे वैज्ञानिक पद्धति कहा जाता है। वैज्ञानिक पद्धति में शामिल चरण होते है–

1. ''घटनाओं और तथ्यों का अवलोकन एवं संग्रहण।
2. समस्या की परिभाषा एवं निर्धारण।
3. तथ्यों का संकलन, प्रयोग, विश्लेषण एवं वर्गीकरण।
4. कारण व कार्य का सम्बन्ध।
5. सिद्धान्तों की स्थापना।''[1]

इस प्रकार वैज्ञानिक पद्धति के माध्यम से किसी भी ज्ञान की शाखा में नए तथ्यों की खोज करने के लिए अन्वेषण या जांच–पड़ताल को अनुसंधान कहा जाता है। इस शोध पत्र में बौद्ध धर्म द्वारा दी गई शिक्षाओं के योगदान जो अनुसंधान के क्षेत्र में मिला, को समझने का प्रयास किया गया है। गौतम बुद्ध ने स्वयं बुद्ध मार्ग पर चलने से पूर्व मौजूद ज्ञान की जांच–पड़ताल की थी, उसमें से जो उचित मिला, उसे स्वीकार कर मानवता की सेवा में बौद्ध धर्म के माध्यम से नवीन दृष्टिकोण विकसित किया था। अनुसंधान के क्षेत्र में बौद्ध धर्म की ये शिखाऐं है–

1. अप्पो दिपो भवः
2. मध्यम मार्ग (सम्मासम बुद्धस्य)।
3. तर्कवादी दृष्टिकोण
4. कार्य कारण सिद्धांत (प्रतीव्य समुव्याद)
5. सनातन धम्म का मार्ग (प्रेम व मैत्री)

अप्पो दिपो भवः– 2500 हजार वर्ष पूर्व सिद्धार्थ गौतम ने अनुसंधान करते हुए सर्वोच्च ज्ञान की पदवी बुद्धत्व को प्राप्त किया था। इस ज्ञान तक पहुँचने से पूर्व उन्होंने भृगु ऋषि की सभी तपस्याओं को समझा, मुनि आलार–कालाम से उनके तपस्या मार्ग को जाना जो साख्य दर्शन के नाम से प्रसिद्ध था, उद्दक रामपुत्र से उसकी ध्यान विधि को भी सीखा और उपयोग कर यह जाना कि सभी की अपनी विशेषताएँ हैं परन्तु ये भी अतिवादिता पर आधारित हैं जो कि मानव मन को शान्ति प्रदान नहीं करती हैं। अतः वे नए ज्ञान की खोज में अकेले ही प्रयासरत रहे उनके मन में अनेक प्रश्न थे, सबसे बड़ा प्रश्न यही था कि मनुष्य–मनुष्य के बीच के लड़ाई–झगड़े को कैसे समाप्त किया जा सकता है। पूर्व से मौजूद ज्ञान मार्गों से उन्हें (ब्रह्म) कोई समाधान नहीं मिल सका। वे अपनी राह बनाने के लिए पूर्व ज्ञान मार्गों से प्राप्त ज्ञान को अपनी समस्या व कठिनाईयों के अनुसार उपयोग कर अपने ज्ञान व बुद्धि की कसौटी पर कस कर करने लगे। उन्हें अपनी राह स्वयं वैज्ञानिक व तर्कपूर्ण ढ़ंग से खेज की, आज सम्पूर्ण विश्व उनके इस ज्ञान को अर्थात् अप्पो दिपो भवः को जानता है। जिसका अर्थ है कि अपने जीवन को यदि सही दशा व दिशा देनी है तो इसके लिए आप स्वयं सबसे बड़े मार्गदर्शक हो। अपने जीवन में दूसरे लोगों के ज्ञान व अनुभव को प्रयोग अवश्य करों परन्तु जिस कार्य को करने से उनका जीवन बदला या सफल बना, यह अनिवार्य नहीं है कि उसे करने से स्वयं का जीवन भी सफल हो। प्रत्येक व्यक्ति की विशेषता या गुण दोषों के आधार पर ही

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

उसके लिए जीवन की सही दिशा व दशा का चुनाव होता है, जो कि प्रत्येक के लिए कभी समान नहीं होती है। शोध क्षेत्र में भी शोध समस्या व उसके निर्धारित क्षेत्र व निदर्शन के आधार पर समाधान खोजा जाता है। प्रत्येक शोध कार्य एक समान तो हो सकता है परन्तु एक नहीं होता।

मानव जीवन भी इसी प्रकार है। जीवन एक जैसा तो होता है परन्तु सभी एक नहीं हो सकते। यह एक न होने की विशेषता ही प्रत्येक मनुष्य को उसकी राह स्वयं स्वतन्त्र होकर चुनने की स्वतन्त्रता प्रदान करती है। मनुष्य स्वयं ही सबसे बड़ा मार्गदर्शक होता है, अपने जीवन को सही दशा व दिशा देने के लिए। यहीं सूक्ष्म व व्यापक बात को महात्मा गौतम बुद्ध ने 2500 वर्ष पूर्व ''अप्पों दिपो भवः'' शब्दों में व्यक्त किया था। किसी भी मौलिक शोध कार्य में इसी नियम या विशेषता का पालन करना अनिवार्य होता है। अन्यथा वह शोध नहीं कहलाता है। शोध की वैज्ञानिक पद्धति में सर्वप्रथम घटनाओं व तथ्यों का अवलोकन एवं संग्रह करना प्रथम पायदान होता है। अप्पो दिपो भवः के माध्यम से यह बात स्पष्ट होती है। गौतम बुद्ध के अन्तिम शब्द थे– ''सब संस्कार अनित्य हैं।''[2] अपने निर्वाण के लिए बिना प्रमाद के यत्नशील हो। तुम अपने लिए स्वयं दीपक हो। अन्तदीपा विहरथ, दूसरे का सहारा न ढूढों।

मध्यम मार्ग (सम्मासम बुद्धस्य)– द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् सामाजिक विज्ञानों के क्षेत्र में शोध कार्य के सम्बन्ध में विशुद्ध विज्ञान को अपनाते हुए व्यवहारवादी क्रांति का आगाज हुआ। व्यवहारवादी विचारधारा के अनुसार राजनीतिक विद्वानों द्वारा यह बताया गया कि समस्या का निदान हो या नहीं हो परन्तु जो भी ज्ञान प्राप्त किया जायेगा वह विशुद्ध विज्ञान आधारित होना चाहिए। परन्तु इस विशुद्ध वैज्ञानिक रीति से ज्ञान प्राप्त कर भी समस्याओं के समाधान नहीं हो रहे थे, जबकि परम्परागत नीति को पूर्णतः निषेध मान लिया गया जिसमें मूल्यों की प्रधानता थी। इस व्यवहारवादी क्रान्ति के प्रति उत्तर में या इसमें सुधार करते हुए उत्तर व्यवहारवादी आन्दोलन का जन्म हुआ। जिसमें यह माना गया कि सामाजिक विज्ञान पूर्णतः विशुद्ध विज्ञान नहीं हो सकते हैं चूंकि वे मानव व मानव व्यवहार के विभिन्न पक्षों की समस्याओं का अध्ययन करते हैं और इनकी प्रकृति स्थिर नहीं रहती है। इसमें मूल्य भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो एक अच्छे समाज के निर्माण के लिए अनिवार्य होते हैं। इस प्रकार ये व्यवहारवादी व उत्तर व्यवहारवादी वैज्ञानिक क्रान्ति का उदाहरण यह बताता है कि अति में समस्याओं का निदान नहीं खोजा सकता है। महात्मा बुद्ध ने भी जीवन की समस्याओं के हल को खोजने के लिए अति को छोड़ते हुए ''मध्यम मार्ग'' के सिद्धान्त को सद्जीवन के लिए सभी जनों के समक्ष प्रस्तुत किया था। उनका प्रसिद्ध कथन था कि वीणा के तारों को इतना मत कसो कि वे टूट जाये और न ही इतना ढीला छोड़ों की वह सुर ही न दें।

वीणा के तारों को इतना ही कसों कि वे मधुर संगीत निकाल सके। शोध भी ऐसा ही क्षेत्र है जहाँ पर अतिवादी और पूर्वाग्राही होकर समस्याओं को नहीं समझा जा सकता है। इसके लिए समस्या के दोनों पक्षों को समझना होगा और पूर्वाग्रह को छोड़ना होगा। ''एक निष्पक्ष अर्थात् सम्मासम अर्थात् जो 'समयानुसार उचित हो, के आधार पर ही कार्य कर समस्याओं का सही समाधान खोजा जा सकेगे।''[3] आज इसे सम्पूर्ण विश्व मध्यम मार्ग के नाम से जानता है। अनुसंधान कार्य का भी सार्वभौमिक उद्देश्य मानव की समस्या का समाधान खोजना होता है। जो कि अतिवादिता के मार्ग पर चलने से नहीं मिलता है। सम्यक दृष्टि अर्थात् स्पष्ट ज्ञान पूर्ण दृष्टिकोण जो सभी के लिए समान भी हो और उसकी स्थिति के अनुसार भी जिससे बौद्ध

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

साहित्य की भाषा में सम्मासम बुद्धस्य कहा जाता है, के अनुसार ही उचित समाधान खोजा जा सकता है। यह सदैव मध्यम ही होता है।

तर्कवादी दृष्टिकोण– ''केसमुक्ति सुत्त या कालाम सुत्र जो त्रिपिटिक के आंगुत्तर निकाय में स्थित है, में गौतम बुद्ध उपदेश देते हैं कि–''किसी को केवल इसलिए मत मानो कि किसी धर्मशास्त्र, ग्रंथ में लिखा है या ज्यादातर लोग मानते हैं।''[4] बुद्ध की शिक्षाओं के अनुसार किसी की भी बात पर आंख मूंदकर विश्वास करना उचित मार्ग नहीं है। किसी भी बात को क्यों, कब, कैसे के प्रश्नों की कसौटी पर कसना चाहिए। यही प्रश्न अनुसंधान की वैज्ञानिक पद्धति की समस्या को समझने, समाधान खोजने के आधार होते हैं। अनुसंधान में भी किसी भी बात को तर्क की कसौटी पर बसे बिना आंखे बन्द कर स्वीकार नहीं किया जाता है। बौद्ध धर्म की यह शिक्षा अनुसंधान के दृष्टिकोण को विकसित करने में बहुत महत्वपूर्ण योगदान समाज को देती है।

कार्यकारण सिद्धान्त (प्रतीत्यसमुत्पाद)– बौद्ध धर्म में माना जाता है कि प्रत्येक कार्य होने के पीछे कोई न कोई कारण उपस्थित होता है, जिसे कार्य कारण सम्बन्ध या सिद्धांत कहा जाता है। इस कार्य कारण सम्बन्ध को प्रतीत्य समुत्पाद कहा जाता है जिसे ''पटिच्चय समुप्पाद'' पाली भाषा में कहा जाता है। प्रतीत्य समुत्पाद दो शुब्द प्रतीत्य व समुत्पाद से मिल कर बना है। ''प्रतीत्य का अर्थ है, किसी एक पर निर्भर होना तथा समुत्पाद की अर्थ है– दूसरे की उत्पति।''[5] अर्थात् किसी एक की वजह से दूसरी चीज का पैदा होना। बौद्ध धर्म में अज्ञानता को मनुष्य की समस्याओं अथवा दुखों का मुख्य कारण माना गया है तथा अज्ञानता के 12 प्रकार बताये गए हैं, ये हैं–

1. अविज्जा (अविद्या), 2. सङ्घार (संस्कार) 3. विञ्ञाण (विज्ञान), 4. नाम रूप (चित व काया) 5. षडायत (छः इंद्रिया) 6. फस्स (स्पर्श), 7. वेदना (संवेदना), 8. तण्हा (तृष्णा), 9. उपादान (आसक्ति), 10 भव (भव) अर्थात् जन्म लेने की इच्छा, 11. जाति (जन्म), 12. जरा मरण (बुढ़ापा–मृत्यु अर्थात् दुःख)

इस अज्ञानता को दूर करने का मार्ग बौद्ध धर्म में आठ प्रकार के मार्ग बताये गए हैं जिन्हें आष्टांगिक मार्ग कहा जाता है। अनुसंधान के क्षेत्र में भी प्रत्येक घटना या समस्या को समझने के लिए उसके घटित होने के कारणों अर्थात् समझ कर समस्याओं के हल को खोजा जाता है। जिसे अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य कारण सिद्धान्त कहा जाता हे। समस्याओं के पैदा होने के पीछे के कारण को जानकर उन्हें दूर करने के उपाय शोधकर्ताओं द्वारा दिए जाते हैं। इस प्रकार यह स्पष्टतः कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म का प्रतीत्य समुत्पाद सिद्धान्त अनुसंधान शिक्षा में में कार्यकारण सिद्धान्त को समझने में तथा शोध की दृष्टि विकसित करने में मददगार साबित होता है। महात्मा बुद्ध प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने इस प्रकार से मनुष्य के जीवन की समस्याओं के समाधानों की खोज की।

सनातन धम्म का मार्ग (प्रेम व मैत्री)– मानव का सदैव परस्पर प्रेम, करूणा और मैत्री के भावों से पोषित होती है। घृणा और नफरत जैसे भावों से मानवता सदैव ही नष्ट होती है। बौद्ध धर्म की शिक्षाओं में बैर को अबैर से जीतने के मार्ग को सनातन धम्म कहा गया है। धम्म पद के यमकवग्गो श्लोक–5 में कहा गया है–

''न हि वेरेन बेरानि सम्मन्तीध कुदाचनं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

अबेरेन च सम्मन्ति एस धम्मो सनन्तनो।''[6]

अर्थात् इस संसार में कभी भी बैर (अप्रेम) से वैर शान्त नहीं होते हैं केवल अवैर (प्रेम) से ही वैर शान्त होता है, यही सनातन धर्म है।'' सनातन का अर्थ है जो कभी समाप्त न हो, निरन्तर चालू रहे। बौद्ध धर्म की यह शिक्षा मानव के विकास व मानवता को बनाये रखने के लिए महत्वपूर्ण शिक्षा है जिसे व्यक्ति अंततः स्वीकार कर ही लेता है। परन्तु जब भी युद्ध व लड़ाईयाँ मनुष्यों के बीच हुई, वहाँ सदैव बैर उपस्थित ही मिलता है, इससे अनेक समस्यायें मानवता के समक्ष खड़ी हो होती है, भूखमरी, गरीबी, घृणा, बेबसी इत्यादि। इन जैसी समस्याओं को दूर करने के लिए अनेक वैज्ञानिक शोध किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य मानवता को पोषित करना ही है। शोध कार्य भी मानव की समस्या को दूर करने के उपाय करते हैं और इसी तरह से गौतमबुद्ध ने भी केवल मानवता को पुष्ट करने के लिए बौद्ध धम्म के द्वारा प्रेम व वैज्ञानिक सोच को विकसित करने, उसे पोषित करने हेतु मार्ग दिखाया। अन्ततः अनुसंधान के क्षेत्र में बौद्ध धर्म द्वारा दी गई शिक्षाओं से तुलना करें तो यह पूर्णतः स्पष्ट हो जाता है कि इन शिक्षाओं द्वारा सदैव अनुसैधानिक दृष्टिकोण को बढ़ावा मिला है। गलत बातों का खण्डन बौद्ध धर्म की शिक्षाऐं व अनुसंधान दोनों ही करते हैं। आधुनिक समय में वैज्ञानिक एवं तकनीकी खोजों अर्थात् अनुसंधानों को निरन्तर किया जा रहा है। अपनी वैज्ञानिक व खोजो के साथ ही मानवतापूर्ण दृष्टिकोण के कारण बौद्ध धर्म की शिक्षाओं के द्वारा अनुसंधान को बढ़ावा मिलता है।

निष्कर्ष (Conclusion)– अनुसंधान के क्षेत्र में बौद्ध शिक्षाओं का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बौद्ध दर्शन ने सत्य की खोज को एक निरंतर प्रक्रिया माना और अनुभव, तर्क तथा विश्लेषण को अनुसंधान का आधार बनाया। बुद्ध द्वारा प्रतिपादित अप्प दीपो भवः (स्वयं प्रकाश बनो) का सिद्धांत शोधकर्ता को स्वतंत्र चिंतन, आत्मावलोकन और वस्तुनिष्ठता की ओर प्रेरित करता है। अनित्य (Impermanence) और प्रतित्यसमुत्पाद (Dependent Origination) जैसी अवधारणाएँ अनुसंधान में परिवर्तनशीलता और पारस्परिक संबंधों की वैज्ञानिक समझ को पुष्ट करती हैं। साथ ही, बौद्ध शिक्षाओं ने नैतिकता को अनुसंधान से जोड़ा और यह स्पष्ट किया कि ज्ञान की खोज केवल बौद्धिक तृप्ति के लिए नहीं, बल्कि समाज और मानवता के कल्याण के लिए भी होनी चाहिए। इस प्रकार, बौद्ध दृष्टिकोण अनुसंधान को केवल तार्किक और अनुभवजन्य ही नहीं, बल्कि मानवीय संवेदनाओं से भी परिपूर्ण बनाता है।

सुझाव (Suggestions)-

1. अनुसंधान में बौद्ध शिक्षाओं की अनुभव–आधारित पद्धति को अपनाना चाहिए, ताकि शोध केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक भी हो।
2. शोधकर्ताओं को सम्यक दृष्टि (Right View) और सम्यक संकल्प (Right Intention) जैसे बौद्ध अष्टांगिक मार्ग के तत्वों से प्रेरणा लेनी चाहिए, जिससे निष्पक्षता और सत्यनिष्ठा बनी रहे।
3. शोध में नैतिक मूल्यों को प्रमुखता दी जानी चाहिए, ताकि शोध मानव कल्याण और सामाजिक उत्थान की दिशा में उपयोगी सिद्ध हो।
4. अंतर्विषयक (Interdisciplinary) अनुसंधान में बौद्ध चिंतन की समग्र दृष्टि (Holistic Vision) को शामिल करना चाहिए, जिससे व्यापक दृष्टिकोण और संतुलन प्राप्त हो सके।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Volume 04, Issue 08, August 2025

5. आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों के साथ बौद्ध शिक्षाओं की संवाद–परंपरा को जोड़कर अनुसंधान को अधिक मानवीय और स्थायी (Sustainable) बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची–

1. भण्डारी, डी0आर0 अनुसंधान पद्धति की विवेचना, राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर।
2. https://samaybuddha.wordpress.com (दिनांक 25.12.2024)
3. जातक कथा और Buddhists Management Dr. Jasbir Chawla/Rahul Dongre show (www.youtube.com) date 03.05.2025
4. https://samaybuddha.wordpress.com (दिनांक 25.12.2024)
5. Buddha : The way of living, Pratitya samutpad in Buddhism Buddha Philosophy, www.youtube.com (Date 02.08.2025)
6. कौसल्यायन, डॉ0 भदन्त आनन्द (अनुवादक), धम्मपद, बुद्धभूमि प्रकाशन, नागपुर।